



अभिव्यक्ति

राजभाषा विभाग,
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे,
रायपुर मंडल
अंक : 14, मई - जून - 2022

मार्गदर्शक श्याम सुंदर गुप्ता, मंडल रेल प्रबंधक	मुख्य संपादक लोकेश विश्नोई, अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी	संपादक निकेश कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी	उप संपादक मनोज कुमार साहू, वरिष्ठ अनुवादक
--	--	--	--

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर की अर्धवार्षिक बैठक

दिनांक 26.05.2022 को मंडल रेल प्रबंधक एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर श्री श्याम सुंदर गुप्ता की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर की वर्ष 2022 की प्रथम छमाही बैठक अधिकारी रेल क्लब 'उल्लास' में आयोजित की गई। वर्तमान में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर के कुल 66 सदस्य कार्यालय हैं। इस बैठक में कुल 58 सदस्य कार्यालयों के कुल 105 कार्यालय प्रमुख/उनके प्रतिनिधिगण उपस्थित हुए।



उक्त बैठक में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर के सदस्य कार्यालयों की दिनांक 01.07.2021 से 31.12.2021 तक की अवधि की राजभाषा प्रगति की समीक्षा की गई तथा विभिन्न मदों पर चर्चा की गई।



अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर एवं मंडल रेल प्रबंधक श्री श्याम सुंदर गुप्ता ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि 'रायपुर नगर स्थित विभिन्न केंद्रीय कार्यालयों, निगमों एवं उपक्रमों से गठित यह समिति राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन की दृष्टि से काफी उपयोगी मंच है। अतः इस मंच से यह अपेक्षा की जाती है कि बैठक के दौरान में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ाने के लिए प्रभावशाली चर्चा हो और उत्कृष्ट एवं नवीन कार्यों को आपस में साझा कर राजभाषा नीति के

कार्यान्वयन के क्षेत्र में हम अपने नगर को नई ऊंचाई पर ले जाएं। इसके लिए आवश्यक है कि सभी सदस्य कार्यालय राजभाषा नीति-नियमों के अनुरूप निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु हर संभव प्रयास करें।'

उन्होंने आशा व्यक्त की कि समिति गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु यथोचित कार्रवाई करती रहेगी ताकि राजभाषा हिंदी प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर होती रहे।

बैठक का संचालन श्री निकेश कुमार पाण्डेय, सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं राजभाषा अधिकारी, द.पू.म.रेलवे, रायपुर ने किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक समाप्त हुई।

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर की 57वीं बैठक

दिनांक 27.06.2022 को मंडल रेल प्रबंधक श्री श्याम सुंदर गुप्ता की अध्यक्षता में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर की 57वीं बैठक आयोजित की गई। बैठक में रेलवे बोर्ड द्वारा जारी मानक कार्यसूची के अनुसार जनवरी-मार्च 2022 तिमाही के दौरान मंडल में हुई राजभाषा प्रगति की समीक्षा की गई।

सर्वप्रथम अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) श्री लोकेश विशनोई ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि हम राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के प्रति सजग एवं प्रयत्नशील हैं। इसी कारण मंडल स्थित सभी सार्वजनिक स्थानों, स्टेशनों, आदि पर जन सामान्य से जुड़ी सूचनाएं द्विभाषी में प्रदर्शित पाए जाते हैं, सभी स्टेशनों पर एनाउंसमेंट छत्तीसगढ़ी, हिंदी एवं अंग्रेजी में की जाती है, रबर मोहर, विभिन्न प्रकार के फार्म आदि द्विभाषी में उपलब्ध हैं।

मंडल रेल प्रबंधक श्री श्याम सुंदर गुप्ता ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सर्वप्रथम श्री लोकेश विशनोई, अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) एवं श्री संतराम बावनथड़े, सहायक /टीआरडी, रनिंग रिपेयर ओएचई कार्यालय, रायपुर को राष्ट्रीय स्तर पर रेल हिंदी निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कृत होने एवं श्री सुदेश कुमार मेहर, मुख्य लोको निरीक्षक, रायपुर की पुस्तक “कभी यूँ भी हो कोई वाक्या” को रेलवे बोर्ड की मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार योजना के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने के लिए बधाई दी और कहा कि इससे



स्पष्ट होता है कि हिंदी के प्रति इनकी रुचि काफी गहरी है परंतु इससे इनकी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है कि वे अपने अधीनस्थों एवं सहकर्मियों को हिंदी के प्रयोग प्रसार के लिए प्रेरित करते रहें। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि आज ई-ऑफिस में हिंदी में काम आसानी से किया जा सकता है, अतः इसके लिए राजभाषा विभाग द्वारा अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। बैठक के दौरान प्रस्तुत कार्यसूची के अवलोकन से यह प्रतीत होता है कि हम थोड़े से प्रयास से राजभाषा हिंदी के लिए निर्धारित लक्ष्यों को पूरा कर सकते हैं। हम आम जनता के लिए कार्य करते हैं और हिंदी आम जनता की संपर्क भाषा है, अतः हमें स्टेशन एरिया में राजभाषा नियमों का समुचित अनुपालन अवश्य सुनिश्चित करना चाहिए।

इस बैठक में श्री आशीष मिश्रा, अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रा.) सहित मंडल के समस्त शाखा अधिकारी उपस्थित थे। बैठक का संचालन राजभाषा अधिकारी श्री निकेश कुमार पाण्डेय द्वारा किया गया।

- " हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है। " - मौलाना हसरत मोहानी
- " हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। " - स्वामी दयानंद
- " हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है। " - मैथिलीशरण गुप्त

समपार फाटक जागरूकता अभियान

रायपुर मंडल में दिनांक 03.06.22 से 09.06.22 तक समपार फाटक जागरूकता अभियान चलाया गया। दिनांक 09.06.2022 को अंतरराष्ट्रीय समपार फाटक जागरूकता दिवस के अवसर पर वॉकाथन आयोजित किया गया। इसके पश्चात नुक्कड़ नाटकों का मंचन कर रेलवे फाटक पर होने वाली दुर्घटनाओं से बचने संबंधी दृश्य को प्रदर्शित किया गया तथा आम जनमानस को संदेश दिया गया कि फाटक बंद होने पर गेटकीपर पर अनावश्यक रूप से फाटक खोलने का दबाव न बनाए जाएं। यह भारतीय रेलवे अधिनियम के तहत दंडनीय अपराध है।



पंपलेट वितरण, स्टीकर, बैनर लगाकर मेगाफोन के माध्यम से लोगों को फाटक पार करते समय सावधानी बरतने तथा बंद फाटक के नीचे से नहीं पार करने एवं रेलवे ट्रैक या लेवल क्रॉसिंग पार करते समय मोबाइल / ईयर फोन का उपयोग न करने की अपील की गई। विभिन्न स्टेशनों में भी अनाउंसमेंट के माध्यम से भी लोगों को जागरूक किया गया।

इस वॉकाथन में मंडल रेल प्रबंधक श्री श्याम सुंदर गुप्ता, अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) श्री लोकेश विश्नोई, अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा) श्री आशीष मिश्रा, वरि मंडल संरक्षा अधिकारी डॉ डी. एन. बिस्वाल एवं मंडल के अधिकारियों सहित सिविल डिफेंस, स्काउट गाइड, मंडल सांस्कृतिक संघ की टीम ने भाग लिया।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वॉकाथन एवं नुक्कड़ नाटक का आयोजन

दिनांक 05.06.2022 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पर्यावरण के प्रति सभी लोगों में जागरूकता बढ़ाने हेतु प्रातः 7:30 बजे से सेक्रेसा मैदान डब्ल्यू आर एस कॉलोनी से मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय तक वाकाथन का आयोजन किया गया। इसमें मंडल रेल प्रबंधक श्री श्याम सुंदर गुप्ता एवं अध्यक्षा सेक्रो श्रीमती राधा गुप्ता एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) श्री लोकेश विश्नोई, अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा) श्री आशीष मिश्रा एवं सेक्रो पदाधिकारियों सहित रायपुर मंडल के अधिकारीगण, सिविल डिफेंस के वालंटियर, रेलवे सुरक्षा बल के जवान, स्पोर्ट्स टीम के सदस्य, स्काउट गाइड सहित रेल कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। इसके पश्चात मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय के प्रांगण में रायपुर मंडल की सांस्कृतिक टीम द्वारा पर्यावरण को बचाने का संदेश देते हुए एक नुक्कड़ नाटक का मंचन किया गया। मंडल रेल प्रबंधक, श्री श्याम सुंदर गुप्ता एवं अध्यक्षा सेक्रो, श्रीमती राधा गुप्ता, एवं अन्य अधिकारियों द्वारा डब्ल्यू आर एस कॉलोनी, रायपुर में वृक्षारोपण किया गया। इस दौरान लगभग 500 पौधे लगाये गए जिनमें से अधिकांश फलदार, छायादार एवं औषधीय पौधे शामिल हैं।



अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

योग हमारे देश की सभ्यता एवं संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। इससे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और हमें असीम आनंद, शक्ति एवं शांति की प्राप्ति होती है। योग से शरीर के साथ-साथ मस्तिष्क भी स्वस्थ रहता है तथा आत्मिक एवं बौद्धिक विकास के साथ-साथ सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। पिछले कुछ वर्षों में भारत की देन 'योग' की महत्ता को पूरी दुनिया स्वीकार करने लगी है। इस कारण प्रतिवर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाने लगा है।



इसी क्रम में दिनांक 21 जून 2022 को आठवें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर भारत के साथ-साथ विश्व के अनेक देशों में योग के कार्यक्रम आयोजित किये गये। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री श्याम सुंदर गुप्ता एवं अध्यक्ष, सेक्रो, रायपुर श्रीमती राधा गुप्ता की गरिमामयी उपस्थिति में प्रातः 06.15 से 08.00 बजे तक 'उल्लास' रेल अधिकारी क्लब, डब्ल्यू. आर. एस. कॉलोनी में योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में रेल अधिकारियों एवं सेक्रो पदाधिकारियों ने भाग लिया। सहायक कार्मिक अधिकारी श्री सुशील कुमार लकड़ा द्वारा सभी का स्वागत किया गया और मंडल रेल प्रबंधक एवं अध्यक्ष, सेक्रो द्वारा दीप प्रज्वलन कर योग दिवस का शुभारंभ किया गया। वीडियो लिंक के माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा योग दिवस के उपलक्ष्य में दिए गए उद्बोधन को सुना



एवं देखा गया। तत्पश्चात् योगा प्रशिक्षक ज्योति सिंह एवं श्री ब्रुस द्वारा योग क्रियाओं का अभ्यास कराया गया। उन्होंने योग व आसनों के लाभ व गुणों के बारे में बताया। आठवें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर रेलवे इंस्टीट्यूट, खारुन रेल विहार, रायपुर में भी योग शिविर का आयोजन किया गया जिसमें रेल कर्मचारी सपरिवार सम्मिलित हुए। इसी प्रकार मंडल के अन्य कार्यालयों, यूनिटों एवं स्टेशनों पर भी रेल कर्मियों को

योग क्रियाओं का अभ्यास कराया गया।

रेलवे की भूमि होगी अतिक्रमण मुक्त

आम जन द्वारा विभिन्न स्थानों पर रेलवे की भूमि को वर्षों से अतिक्रमण कर रखा गया था। राजसंपदा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन), रायपुर द्वारा विशेष पहल कर कुछ स्थानों पर अतिक्रमण किए गए भूमि को मुक्त कराए गए।

दल्लीराजहरा में टी.एस.एस. निर्माण हेतु चिह्नित स्थान वार्ड नं 27 पर 37 अनाधिकृत अतिक्रमण को हटाने हेतु इंजीनियरी विभाग द्वारा पी.पी. एक्ट 1971 के तहत राजसंपदा अधिकारी, रायपुर के समक्ष केस दर्ज किया गया। फलतः राजसंपदा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन), रायपुर द्वारा अतिक्रमणकारियों की 7



अलग-अलग तिथियों को सुनवाई की गयी। अर्थात इन्हें सुनवाई में उपस्थित होने हेतु 7 मौके दिये गये। इस दौरान उपस्थित अतिक्रमणकारियों द्वारा रेलवे की जमीन पर अतिक्रमण किए जाने की पुष्टि होने पर राजसंपदा अधिकारी द्वारा दिनांक 17.11.2021 को अतिक्रमण से बेदखली का आदेश जारी किया गया।

बालोद स्थित वार्ड क्रमांक 2, गेट सं. डीडी - 50 के पास 31 अनाधिकृत अतिक्रमण को हटाने हेतु इंजीनियरी विभाग द्वारा पी.पी. एक्ट 1971 के तहत राजसंपदा अधिकारी, रायपुर के समक्ष केस दर्ज किया गया। फलतः राजसंपदा अधिकारी द्वारा अतिक्रमणकारियों की 4 अलग-अलग तिथियों में सुनवाई की गयी। अतिक्रमणकारियों को सुनवाई में उपस्थित होने हेतु 4 मौके दिये गये। पुष्टि होने पर राजसंपदा अधिकारी द्वारा दिनांक 24.11.2021 को अतिक्रमण से बेदखली का आदेश जारी किया गया। सहा. मंडल इंजीनियर - II, भिलाई द्वारा अनुभाग अभियंता (कार्य) / बालोद, रेल सुरक्षा बल एवं स्थानीय प्रशासन के सहयोग से दिनांक 05.04.2022 को उक्त स्थल को अतिक्रमणमुक्त कर दिया गया।



रायपुर में रायपुर से वाल्टेयर की ओर जाने वाली रेल लाइन का दोहरीकरण करने के हेतु रेलवे खंभा कि.मी. 02/1-2 से 03/5-6 एवं आर.एस.डी.158 से 193 तक 263 अनाधिकृत अतिक्रमण को हटाने हेतु इंजीनियरी विभाग द्वारा पी.पी. एक्ट 1971 के तहत राजसंपदा अधिकारी, रायपुर के समक्ष केस प्रस्तुत किया गया। राजसंपदा अधिकारी के द्वारा अतिक्रमणकारियों की 10 तिथियों में सुनवाई की गई। उन्हें सुनवाई में उपस्थित होने हेतु 3 मौके दिये गये। सुनवाई के दौरान उपस्थित अतिक्रमणकारियों द्वारा रेलवे की जमीन पर अतिक्रमण स्वीकार्य कर लेने के पश्चात राजसंपदा अधिकारी द्वारा

दिनांक 07.10.2021 को अतिक्रमण से बेदखली का आदेश जारी किया गया। सहायक मंडल अभियंता / रेलपथ / रायपुर के द्वारा सीनियर सेक्शन इंजीनियर (रेलपथ) / अभनपुर, रेल सुरक्षा बल एवं स्थानीय प्रशासन के सहयोग से अभी तक 47 अतिक्रमणों को मुक्त कर दिया गया है। शेष अतिक्रमण को भी हटाने के लिये प्रयास किये जा रहे हैं। रायपुर मंडल द्वारा अतिक्रमण को हटाया जाना एक उपलब्धि है जिससे रेलवे की विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन सुगमता से संभव हो सकेगा।

लेन - देन

एक भिखारी था ! रेल सफ़र में भीख माँगने के दौरान एक सूट बूट पहने सेठ जी उसे दिखे। उसने सोचा कि यह व्यक्ति बहुत अमीर लगता है, इससे भीख माँगने पर यह मुझे जरूर अच्छे पैसे देगा। वह उस सेठ से भीख माँगने लगा। भिखारी को देखकर उस सेठ ने कहा, "तुम हमेशा मांगते ही हो, क्या कभी किसी को कुछ देते भी हो?" भिखारी बोला, "साहब मैं तो भिखारी हूँ, हमेशा लोगों से मांगता ही रहता हूँ, मेरी इतनी औकात कहाँ कि किसी को कुछ दे सकूँ।"

सेठ ने कहा कि "जब तुम किसी को कुछ दे नहीं सकते तो तुम्हें माँगने का भी कोई हक़ नहीं है। मैं एक व्यापारी हूँ और लेन-देन में ही विश्वास करता हूँ।

अगर तुम्हारे पास मुझे कुछ देने को हो तभी मैं तुम्हे बदले में कुछ दे सकता हूँ।"

तभी वह स्टेशन आ गया जहाँ पर उस सेठ को उतरना था। वह सेठ उस ट्रेन से उतरा और चला गया।

इधर भिखारी सेठ की कही गई बात के बारे में सोचने लगा। सेठ के द्वारा कही गयी बात उस भिखारी के दिल में उतर गई।

वह सोचने लगा कि शायद मुझे भीख में अधिक पैसा इसीलिए नहीं मिलता क्योंकि मैं उसके बदले में किसी को कुछ दे नहीं पाता हूँ। लेकिन मैं तो भिखारी हूँ, किसी को कुछ देने लायक भी नहीं हूँ? लेकिन कब तक मैं लोगों को बिना कुछ दिये केवल मांगता ही रहूँगा। बहुत सोचने के बाद भिखारी ने निर्णय लिया कि जो भी व्यक्ति उसे भीख देगा तो उसके बदले में वह भी उस व्यक्ति को कुछ न कुछ जरूर देगा। लेकिन अब उसके दिमाग में यह प्रश्न चल रहा था कि वह खुद भिखारी है तो भीख के बदले में वह दूसरों को क्या दे सकता है?

इस बात को सोचते हुये उसका पूरा दिन गुजर गया लेकिन उसे अपने प्रश्न का कोई उत्तर नहीं मिला। दूसरे दिन जब वह स्टेशन के पास बैठा हुआ था तभी उसकी नजर कुछ फूलों पर पड़ी जो स्टेशन के आस-पास के पौधों पर खिल रहे थे, उसने सोचा क्यों न मैं लोगों को भीख के बदले कुछ फूल दे दिया करूँ? उसको अपना यह विचार अच्छा लगा और उसने वहाँ से कुछ फूल तोड़ लिये। उन फूलों को लेकर वह ट्रेन में भीख माँगने पहुँचा। जब भी कोई उसे भीख देता तो उसके बदले में वह भीख देने वाले को कुछ फूल दे देता। उन फूलों को लोग खुश होकर अपने पास रख लेते थे। अब भिखारी रोज फूल तोड़ता और भीख के बदले में उन फूलों को लोगों में बांट देता था।

कुछ ही दिनों में उसने महसूस किया कि अब उसे बहुत अधिक लोग भीख देने लगे हैं। वह स्टेशन के पास के सभी फूलों को तोड़ लाता था। जब तक उसके पास फूल रहते थे तब तक उसे बहुत से लोग भीख देते थे, लेकिन जब फूल बांटते बांटते ख़त्म हो जाते तो उसे भीख भी नहीं मिलती थी, अब रोज ऐसा ही चलता रहा।

एक दिन जब वह भीख मांग रहा था तो उसने देखा कि वही सेठ ट्रेन में बैठे हैं जिसकी वजह से उसे भीख के बदले फूल देने की प्रेरणा मिली थी।

वह तुरंत उस व्यक्ति के पास पहुँच गया और भीख माँगते हुए बोला, आज मेरे पास आपको देने के लिए कुछ फूल हैं, आप मुझे भीख दीजिये बदले में मैं आपको कुछ फूल दूँगा।

सेठ ने उसे भीख के रूप में कुछ पैसे दे दिये और भिखारी ने कुछ फूल उसे दे दिये। उस सेठ को भिखारी की यह बात बहुत पसंद आयी।

सेठ ने कहा "वाह क्या बात है...? आज तुम भी मेरी तरह एक व्यापारी बन गये हो?" इतना कहकर सेठ वह फूल लेकर स्टेशन पर उतर गया।

लेकिन उस सेठ द्वारा कही गई बात एक बार फिर से उस भिखारी के दिल में उतर गई? वह बार-बार उस सेठ के द्वारा कही गई बात के बारे में सोचने लगा और बहुत खुश होने लगा। अब उसकी आँखें चमकने लगीं थीं। उसे लगने लगा कि अब उसके हाथ सफलता की वह चाबी लग गई है जिसके द्वारा वह अपने जीवन को बदल सकता है। वह तुरंत ट्रेन से नीचे उतरा और उत्साहित होकर बहुत तेज आवाज में ऊपर आसमान की ओर देखकर बोला, "मैं भिखारी नहीं हूँ, मैं तो एक व्यापारी हूँ। मैं भी उस सेठ जैसा बन सकता हूँ। मैं भी अमीर बन सकता हूँ। लोगों ने उसे देखा तो सोचा कि शायद यह भिखारी पागल हो गया है। अगले दिन से वह भिखारी उस स्टेशन पर फिर कभी नहीं दिखा।

एक वर्ष बाद इसी स्टेशन पर दो व्यक्ति सूट बूट पहने हुए यात्रा कर रहे थे। दोनों ने एक दूसरे को देखा तो उसमें से एक ने दूसरे को हाथ जोड़कर प्रणाम किया और कहा कि

"क्या आपने मुझे पहचाना?"

सेठ:- "नहीं तो! शायद हम लोग पहली बार मिल रहे हैं?"

भिखारी:- सेठ जी.. आप याद कीजिए, हम पहली बार नहीं बल्कि तीसरी बार मिल रहे हैं।"

सेठ:- मुझे याद नहीं आ रहा, वैसे हम पहले दो बार कब मिले थे?"

अब पहला व्यक्ति मुस्कुराया और बोला: हम पहले भी दो बार इसी ट्रेन में मिले थे। उसने हाथ जोड़कर कहा कि सेठ जी मैं वही भिखारी हूँ जिसको आपने पहली मुलाकात में बताया कि मुझे जीवन में क्या करना चाहिए और दूसरी मुलाकात में बताया कि मैं वास्तव में कौन हूँ। नतीजा यह निकला कि आज मैं फूलों का एक बहुत बड़ा व्यापारी हूँ और इसी व्यापार के काम से दूसरे शहर जा रहा हूँ। आपने मुझे पहली मुलाकात में प्रकृति का नियम बताया था, जिसके अनुसार हमें तभी कुछ मिलता है, जब हम कुछ देते हैं। लेन देन का यह नियम वास्तव में काम करता है, सेठ जी मैंने यह बहुत अच्छी तरह महसूस किया है। लेकिन मैं खुद को हमेशा भिखारी ही समझता रहा, इससे ऊपर उठकर मैंने कभी सोचा ही नहीं था और जब आपसे मेरी दूसरी मुलाकात हुई तब आपने मुझे बताया कि मैं एक व्यापारी बन चुका हूँ। तब मैं समझा कि मैं वास्तव में एक भिखारी नहीं बल्कि व्यापारी बन चुका हूँ।

भारतीय ऋषियों ने संभवतः इसीलिए स्वयं को जानने पर सबसे अधिक जोर दिया और फिर कहा - सोऽहं शिवोऽहम् !! समझ की ही तो बात है...? भिखारी ने स्वयं को जब तक भिखारी समझा, वह भिखारी ही रहा। लेकिन जब उसने स्वयं को व्यापारी मान लिया, वह व्यापारी बन गया।

इसी प्रकार जिस दिन हम ठान लेंगे कि हमें उस मंजिल तक पहुंचना है, तो फिर अपनी मनचाही मंजिल तक पहुंचने से आपको कोई नहीं रोक सकता। आप एक बार खुद से वायदा तो कीजिये। आप एक बार खुद पर भरोसा तो कीजिये। कोई भी ऐसा लक्ष्य नहीं जिसे आप पा न सकें...

संकलनकर्ता - लोकेश विशनोई

अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन)

द.पू.म.रेलवे, रायपुर

माह के साहित्यकार - विष्णु प्रभाकर

जन्म	: 21 जून 1912
निधन	: 11 अप्रैल 2009
जन्म स्थान	: मीरापुर, मुजफ्फर नगर (उत्तरप्रदेश)
प्रमुख कृतियाँ	: ढलती रात, स्वप्नमयी, अर्धनारीश्वर, धरती अब भी घूम रही है, क्षमादान, नव प्रभात, प्रकाश और परछाइयाँ, बारह एकांकी, संघर्ष के बाद, मेरा वतन, अशोक, अब और नहीं, टूटते परिवेश, पंखहीन, आवारा मसीहा
विविध	: 'पद्म भूषण', साहित्य अकादमी पुरस्कार, 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार', 'मूर्तिदेवी पुरस्कार' और 'शलाका सम्मान'



फ़र्क

उस दिन उसके मन में इच्छा हुई कि भारत और पाक के बीच की सीमारेखा को देखा जाए, जो कभी एक देश था, वह अब दो होकर कैसा लगता है? दो थे तो दोनों एक-दूसरे के प्रति शंकालु थे. दोनों ओर पहरा था। बीच में कुछ भूमि होती है जिस पर किसी का अधिकार नहीं होता। दोनों उस पर खड़े हो सकते हैं। वह वहीं खड़ा था, लेकिन अकेला नहीं था - पत्नी थी और थे अठारह सशस्त्र सैनिक और उनका कमाण्डर भी। दूसरे देश के सैनिकों के सामने वे उसे अकेला कैसे छोड़ सकते थे! इतना ही नहीं, कमाण्डर ने उसके कान में कहा, 'उधर के सैनिक आपको चाय के लिए बुला सकते हैं, जाइएगा नहीं, पता नहीं क्या हो जाए? आपकी पत्नी साथ में है और फिर कल हमने उनके छह तस्कर मार डाले थे।'

उसने उत्तर दिया, 'जी नहीं, मैं उधर कैसे जा सकता हूँ?' और मन ही मन कहा-मुझे आप इतना मूर्ख कैसे समझते हैं? मैं इंसान, अपने-पराए में भेद करना मैं जानता हूँ। इतना विवेक मुझमें है।

वह यह सब सोच रहा था कि सचमुच उधर के सैनिक वहां आ पहुंचे। रौबिले पठान थे। बड़े तपाक से हाथ मिलाया। उस दिन ईद थी। उसने उन्हें 'मुबारकबाद' कहा। बड़ी गरमजोशी के साथ एक बार फिर हाथ मिलाकर वे बोले, 'इधर तशरीफ़ लाइए, हम लोगों के साथ एक प्याला चाय पीजिए।'

इसका उत्तर उसके पास तैयार था। अत्यन्त विनम्रता से मुस्कराकर उसने कहा, 'बहुत-बहुत शुक्रिया। बड़ी खुशी होती आपके साथ बैठकर, लेकिन मुझे आज ही वापस लौटना है और वक्त बहुत कम है। आज तो माफ़ी चाहता हूँ।'

इसी प्रकार शिष्टाचार की कुछ बातें हुई कि पाकिस्तान की ओर से कुलांचें भरता हुआ बकरियों का एक दल, उनके पास से गुज़रा और भारत की सीमा में दाखिल हो गया। एक-साथ सबने उनकी ओर देखा। एक क्षण बाद उसने पूछा, 'ये आपकी हैं?'

उनमें से एक सैनिक ने गहरी मुस्कराहट के साथ उत्तर दिया, 'जी हां, जनाब! हमारी हैं, जानवर हैं, फ़र्क करना नहीं जानते.'

पाठकों की प्रतिक्रियाएं एवं रचनाएं सादर आमंत्रित हैं। कृपया अपने सुझाव तथा प्रकाशन हेतु रचनाएं व्हाट्सएप्प नंबर 9752877615 अथवा ई-मेल tolic.raipur.drm@gmail.com पर प्रेषित करें ताकि हम अभिव्यक्ति को और बेहतर बना सकें। यह ई-पत्रिका दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की वेबसाइट में भी उपलब्ध है।

मंडल की गतिविधियां संबंधी विवरण एवं फोटोग्राफ्स जनसंपर्क अनुभाग, रायपुर से साभार।